समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

संस्करण–सप्तम् माह–दिसम्बर

Edition -VII Month- DECEMBER

आतंकवाद का समाधान

एल ओ सी भारत–पाक सीमा दशकों से अघोषित युद्ध की रणभूमि बनी हुई है। पाक प्रायोजित आतंकवाद इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या है। आतंकवादियों का सरपरस्त आतंकी स्थान अर्थात पाकिस्तान हर बार युद्ध में बुरी तरह से हारने के कारण छद्म युद्ध के सहारे अपने घृणित मंसूबों से आम जनजीवन को प्रभावित करने की भरपूर कोशिश करता रहता है। भारत में जितने भी आतंकवादी घटनाएं होती हैं उनमें से लगभग सभी घटनाओं में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान पूर्णतः जिम्मेदार होता है। चाहे खालिस्तानी आतंकवाद हो या इस्लामिक कट्टरवाद सब का संपूर्ण जिम्मेदारियां मुल्क भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के लिए दहशतगर्दी का माहौल बनाने में लगा रहता है। दुष्ट चांडाल चीन आतंकवाद फैलाने और आतंकियों की सुरक्षा करने में पाकिस्तान को भरपूर सहयोग देता है। साम्राज्यवादी नीतियों के अंतर्गत ड्रैगन ने पाकिस्तान को अपने कर्ज तले इस तरह जकड़ लिया है कि जिन्ना खुद भी प्रकट हो जाए तो भी पाकिस्तान को नाम होने से बचा नहीं सकता है। सदैव चीन के सामने कटोरा लेकर खड़ा भीख मांगता इमरान खान जो पाकिस्तान का वर्तमान प्रधानमंत्री है चीन की मर्जी के बिना एक सांस भी नहीं ले सकता उधर तुर्की मुस्लिम देशों का खलीफा बनने की चाहत में पाकिस्तान का नया मददगार बन कर खड़ा हुआ है। सीरियाई आतंकियों का रहनुमा तुर्की आतंकवाद का दूसरा नायक है। आतंकवाद विश्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है और इस के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए संपूर्ण विश्व को एकजुट होना चाहिए।भारत में आतंकवादियों की घुसपैठ के लिए पाकिस्तानी सेना लगातार सीजफायर का उल्लंघन करती है और नित नए रास्ते खोजती है ताकि आतंकवादियों को भारत की सीमा में प्रवेश करा सके।यहां यदि समझने की जरुरत है कि पाकिस्तान कि गोलीबारी का क्षेत्र भारत के रिहायशी इलाकों की तरफ ज्यादा होता है जिसे आम जनजीवन पूरी तरह से अस्त व्यस्त हो जाता है। बाकी सेना पाकिस्तानी कार्यवाही का उचित जवाब भी देती है पाकिस्तान को भारी क्षति भी पहुंचती है परंतु पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आता। जिस प्रकार देब पर भारतीय सेना ने चीन के हौसले को पस्त कर दिया है इसके कारण चीन पूरी तरह विचलित हो चुका है और भारतीय हिम वीरों के युद्ध कौशल और इरादों के सामने खुद को बेबस महसूस कर रहा है। अतः वह अपने पाकिस्तानी पिट्ठू इमरान खान और जनरल बाजवा को शह देकर आतंकवादी की घुसपैठ को तेज करने के लिए पूरा समर्थन दे रहा है और युद्ध सामग्री भी। एल ए सी और एलओसी दोनों ही ओर युद्धध्क माहौल बना हुआ है। इधर यह भी देखना पड़ेगा कि पाकिस्तानी सीजफायर के उल्लंघन और आतंकवादियों की घुसपैठ में भारतीय सेना के जवान और आम नागरिकों को नुकसान उठाना पड़ता है। पुलवामा की घटना के बाद भारत की एयर स्ट्राइक से तबाह हुआ बालाकोट का आतंकी केंद्र पाकिस्तान ने पुनः आबाद कर लिया है और पूरी हाईटेक प्रणालियों के साथ जिसमें एयर सर्विलांस की सुविधा भी उपलब्ध है।

भारतीय शासन व्यवस्था को यह देखना चाहिए कि कब तक हम विश्व समुदाय का इंतजार करेंगे हमें उस नतीजे पर पहुंचना पड़ेगा जहां इस संपूर्ण समस्या का समाधान हो सके और समाप्त हो सके यह समस्त कायराना कार्यवाहियां । भारतीय सरकार से हमारा सादर अनुरोध है कि अब समय आ गया है आर पार की कार्यवाही का। समय जाया करना और इनके घृणित छद्म युद्ध जिससे हमारे वीरों की शहादत और आम नागरिकों का लगातार हो रहा नुकसान बंद हो।यह तो हम अच्छी तरह समझ चुके हैं चाहे कुछ भी हो ये लोग अपनी कार्यवाही से बाज नहीं आएंगे ना ही कभी स्वीकार करेंगे। ऐसा उत्तर देना चाहिए इन घृणित कार्यवाही को और इस घृणित आतंकवाद को की आतंकीस्तान सहित संपूर्ण विश्व को सबक मिल सके कि ऐसी नीच और घृणित कार्यवाही का परिणाम क्या होता है। इसके लिए प्रतिदिन जो कीमत हम चुका रहे हैं उसका सम्पूर्ण समाधान होना चाहिए और पूर्णतःविराम लगना चाहिए इस मानसिकता पर यही एकमात्र उपाय है।

संपादक
तरुण सिंह

हमारे कृषक

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं है।

मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं है
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।

बैलों के ये बंधू वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं
बंधी जीभ, आँखें विषम गम खा शायद आँसू पीते हैं।

पर शिशु का क्या, सीख न पाया अभी जो आँसू पीना
चूस–चूस सूखा स्तन माँ का, सो जाता रो–विलप नगीना।

विवश देखती माँ आँचल से नन्ही तड़प उड़ जाती
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती।

कब्र–कब्र में अबोध बालकों की भूखी हड्डी रोती है
दूध–दूध की कदम–कदम पर सारी रात होती है।

दूध–दूध औ वत्स मंदिरों में बहरे पाषान यहाँ है
दूध–दूध तारे बोलो इन बच्चों के भगवान कहाँ हैं।

दूध–दूध गंगा तू ही अपनी पानी को दूध बना दे
दूध–दूध उफ कोई है तो इन भूखे मुर्दों को जरा मना दे।

दूध–दूध दुनिया सोती है लाऊँ दूध कहाँ किस घर से
दूध–दूध हे देव गगन के कुछ बूँदें टपका अम्बर से।

हटो व्योम के, मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं
दूध–दूध हे वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं.।

रामधारी सिंह दिनकर

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह,
संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

समृद्ध भारत जागृति (2)

एक नयी शुरुआत

वर्ल्ड बैंक ने एक इन्सान की औसत आयु 78 वर्ष मानकर यह आकलन किया है जिसके अनुसार हमारे पास अपने लिए मात्र 9 वर्ष व 6 महीने ही होते हैद्य इस आकलन के अनुसार औसतन 29 वर्ष सोने में, 3–4 वर्ष शिक्षा में, 10–12 वर्ष रोजगार में, 9–10 वर्ष मनोरंजन में, 15–18 वर्ष अन्य रोजमरा के कामों में जैसे खाना पीना, यात्रा, नित्य कर्म, घर के काम इत्यादि में खर्च हो जाते हैद्य इस तरह हमारे पास अपने सपनों को पूरा करने व कुछ कर दिखाने के लिए मात्र 3500 दिन अथवा 84,000 घंटे ही होते है।

''संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु समय ही है'' ।लेकिन वर्तमान में ज्यादातर लोग निराशामय जिंदगी जी रहे है और वे इंतजार कर रहे होते है कि उनके जीवन में कोई चमत्कार होगा, जो उनकी निराशामय जिंदगी को बदल देगा। दोस्तों वह चमत्कार आज व अभी से शुरू होगा और उस चमत्कार को करने वाले व्यक्ति आप ही है, क्योंकि उस चमत्कार को आप के अलावा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सकता।

इस शुरुआत के लिए हमें अपनी सोच व मान्यताओ को बदलना होगा, क्योंकि ''हमारे साथ वही होता है जो हम मानते है।'' वैज्ञानिकों के अनुसार भौंरे का शरीर बहुत भारी होता है, इसलिए विज्ञान के नियमो के अनुसार वह उड़ नहीं सकताद्य लेकिन भौंरे को इस बात का पता नहीं होता एंव वह यह मानता है की वह उड़ सकता है इसलिए वह उड़ पाता है।

सबसे पहले हमें इस गलत धारणा को बदलना होगा कि हमारे साथ वही होता है जो भाग्य में लिखा होता हैद्य क्योंकि ऐसा होता तो आज हम ईश्वर की पूजा न कर रहे होते बल्कि उन्हें बदुआएं दे रहे होते।हमारे साथ जो कुछ भी होता है उसके जिम्मेदार हम स्वंय होते है इसलिए खुश रहना या न रहना हम पर ही निर्भर करता है।

''भगवान उसी की मदद करते है जो अपनी मदद खुद करता है''अगर कोई व्यक्ति यह सोचता है की हमारे साथ जो कुछ भी होता है, वह हमारे हाथ में नहीं है तो वह व्यक्ति या तो इस गलत धारणा को बदल दे या आगे इस लेख को न पढें

जीवन के नियम :–

हम एक नयी शुरुआत करने जा रहे है और इसके लिए हमें कुछ नियमो का पालन करना होगा। ये नियम आपकी जिंदगी बदल देंगे :–

1.आत्मविश्वास :–

आत्मविश्वास से आशय ''स्वंय पर विश्वास एंव नियंत्रण'' से है। दोस्तों हमारे जीवन में आत्मविश्वास का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी फूल में खुशबू (सुगंध) का होना, आत्मविश्वास के बगैर हमारी जिंदगी एक जिन्दा लाश के समान हो जाती हैद्य कोई भी व्यक्ति कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो वह आत्मविश्वास के बिना कुछ नहीं कर सकताद्य आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है, आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपने द्वारा किये गए कार्य पर संदेह करता है। आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वंय से संतुष्ट होता है एंव जिसके पास दृड़ निश्चय, मेहनत व लगन , साहस, वचनबद्धता आदि संस्कारों की सम्पति होती है।

2.स्वतंत्रता :–

स्वतंत्रता का अर्थ स्वतन्त्र सोच एंव आत्मनिर्भरता से हैं।''हमारी खुशियों का सबसे बड़ा दुश्मन निर्भरता ही है एंव वर्तमान में खुशियाँ कम होने का कारण निर्भरता का बढ़ना ही है''

''सबसे बड़ा यही रोग क्या कहेंगे लोग '':–

ज्यादातर लोग कोई भी कार्य करने से पहले कई बार यह सोचते है की वह कार्य करने से लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे या क्या कहेंगे और इसलिए वे कोई निर्णय ले ही नहीं पाते एंव सोचते ही रह जाते है एंव समय उनके हाथ से पानी की तरह निकल जाता है। ऐसे लोग बाद में पछताते हैं। इसलिए दोस्तों ज्यादा मत सोचिये जो आपको सही लगे वह कीजिये क्योंकि शायद ही कोई ऐसा कार्य होगा जो सभी लोगों को एक साथ पसंद आये।

अपनी खुशी को खुद नियंत्रण कीजिये:–

वर्तमान में ज्यादातर लोगों की खुशियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हैंद्य ऐसे लोग अनुकूल परिस्थिति में खुश एंव प्रतिकूल परिस्थियों में दुखी हो जाते है।उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति का कोई काम बन जाता है तो वह खुश एंव काम न बनने पर वह दुखी हो जाता है।दोस्तों हर परिस्थिति में खुश रहें क्योंकि प्रयास करना हमारे हाथ में है लेकिन परिणाम अथवा परिस्थिति हमारे हाथ में नहीं है।परिस्थिति अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी हो सकती है लेकिन उसका अच्छा ही होना चाहिए।

आत्मनिर्भर बनें:–

दोस्तों निर्भरता ही खुशियों की दुशमन है इसलिए जहाँ तक हो सके दूसरों से अपेक्षाओं कम करें, अपना कार्य स्वंय करें एंव स्वालंबन अपनाएं दूसरों के कर्मों या विचारों से दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि दूसरों के विचार या कर्म हमारे नियंत्रण में नहीं है।

अपनी खुशी को खुद नियंत्रण कीजिये:–

वर्तमान में ज्यादातर लोगों की खुशियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हैंद्य ऐसे लोग अनुकूल परिस्थिति में खुश एंव प्रतिकूल परिस्थियों में दुखी हो जाते है।उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति का कोई काम बन जाता है तो वह खुश एंव काम न बनने पर वह दुखी हो जाता है।दोस्तों हर परिस्थिति में खुश रहें क्योंकि प्रयास करना हमारे हाथ में है लेकिन परिणाम अथवा परिस्थिति हमारे हाथ में नहीं है।परिस्थिति अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी हो सकती है लेकिन उसका अच्छा ही होना चाहिए।

आत्मनिर्भर बनें:–

दोस्तों निर्भरता ही खुशियों की दुशमन है इसलिए जहाँ तक हो सके दूसरों से अपेक्षाओं कम करें, अपना कार्य स्वंय करें एंव स्वालंबन अपनाएं दूसरों के कर्मों या विचारों से दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि दूसरों के विचार या कर्म हमारे नियंत्रण में नहीं है।

अपनी खुशी को खुद नियंत्रण कीजिये:–

वर्तमान में ज्यादातर लोगों की खुशियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हैंद्य ऐसे लोग अनुकूल परिस्थिति में खुश एंव प्रतिकूल परिस्थियों में दुखी हो जाते है। उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति का कोई काम बन जाता है तो वह खुश एंव काम न बनने पर वह दुखी हो जाता है। दोस्तों हर परिस्थिति में खुश रहें क्योंकि प्रयास करना हमारे हाथ में है लेकिन परिणाम अथवा परिस्थिति हमारे हाथ में नहीं है। परिस्थिति अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी हो सकती है लेकिन उसका त अच्छा ही होना चाहिए क्योंकि उसपे प्रतिक्रिया करना हमारे हाथ में है ''अगर आप उस बातों या परिस्थियों की वजह से दुखी हो जाते है जो आपके नियंत्रण में नहीं है तो इसका परिणाम समय की बर्बादी व भविष्य पछतावा है''

3.वर्तमान में जिएं :–

दोस्तों हमें दिन में 70,000 से 90000 विचार आते है और हमारी सफलता एंव असफलता इसी विचारों की गुणवता पर निर्भर करती हैंद्य वैज्ञानिकों के अनुसार ज्यादातर लोगों का 70: से 90: तक समय भूतकाल, भविष्यकाल एंव व्यर्थ की बातें सोचने में चला जाता है। भूतकाल हमें अनुभव देता है एंव भविष्यकाल के लिए हमें योजना करनी होती है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं की हम अपना सारा समय इसी में खर्च कर दें। दोस्तों हमें वर्तमान में ही रहना चाहिए और इसे बेहतर बनाना चाहिए क्योंकि न तो भूतकाल एंव न ही भविष्यकाल पर हमारा नियंत्रण है। ''अगर खुश रहना है एंव सफल होना है तो उस बारे में सोचना बंद कर दें जिस पर हमारा नियंत्रण न हो''

4.मेहनत एंव लगन:–

दोस्तों किसी विद्वान् ने कहा है की कामयाबी, मेहनत से पहले केवल शब्दकोष में ही मिल सकती हैद्य मेहनत का अर्थ केवल शारीरिक काम से नहीं है, मेहनत शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार से हो सकती है। अनुभव यह कहता है की मानसिक मेहनत, शारीरिक मेहनत से ज्यादा मूल्यवान होती हैद्यकुछ लोग लक्ष्य तो बहुत बड़ा बना देते है लेकिन मेहनत नहीं करते और फिर अपने अपने लक्ष्य को बदलते रहते हैद्य ऐसे लोग केवल योजना बनाते रह जाते है।

मेहनत व लगन से बड़े से बड़ा मुश्किल कार्य आसान हो जाता हैद्य अगर लक्ष्य को प्राप्त करना है तो बीच में आने वाली बाधाओं को पार करना होगा, मेहनत करनी होगी, बार बार दृढ़ निश्चय से कोशिश करनी होगी।''असफल लोगों के पास बचने का एकमात्र साधन यह होता है कि वे मुसीबत आने पर अपने लक्ष्य को बदल देते है। कुछ लोग ऐसे होते है जो मेहनत तो करते है लेकिन एक बार विफल होने पर निराश होकर कार्य को बीच में ही छोड़ देते है इसलिए मेहनत के साथ साथ लगन व दृढ़ निश्चय का होना भी अति आवश्यक है।''अगर कोई व्यक्ति बार बार उस कार्य को करने पर भी सफल नहीं हो पा रहा तो इसका मतलब उसका कार्य करने का तरीका गलत है एंव उसे मानसिक मेहनत करने की आवश्यकता है।''

5.व्यवहारकुशलता:–

व्यवहारकुशल व्यक्ति जहाँ भी जाए वह वहां के वातावरण को खुशियों से भर देता है ऐसे लोगों को समाज सम्मान की दृष्टी से देखा जाता हैद्य ऐसे लोग नम्रता व मुस्कराहट के साथ व्यवहार करते है एंव हमेशा मदद करने के लिए तैयार रहते हैद्य शिष्टाचार ही सबसे उत्तम सुन्दरता है जिसके बिना व्यक्ति केवल स्वयं तक सीमित हो जाता है एंव समाज उसे ''स्वार्थी'' नाम का अवार्ड देता है।''जब आपके मित्रों की संख्या बढने लगे तो यह समझ लीजिये कि आप ने व्यवहारकुशलता का जादू सीख लिया हैद्य''शिष्टाचारी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र भी जाए वहा उनके मित्र बन जाते है जो उसके लिए जरुरत पड़ने पर मर मिटने के लिए तैयार रहते है।

चरित्र व्यवहारकुशलता की नींव है एंव चरित्रहीन व्यक्ति कभी भी शिष्टाचारी नहीं बन सकताद्य चरित्र, व्यक्ति की परछाई होती है एंव समाज में व्यक्ति को चहरे से नहीं बल्कि चरित्र से पहचाना जाता है। चरित्र का निर्माण नैतिक मूल्यों, संस्कारों, शिक्षा एंव आदतों से होता है। व्यवहारकुशल व्यक्तियों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है की वह हमेशा मदद के लिए तैयार रहते हैवर्तालाप दक्षता, व्यवहारकुशलता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वाणी में वह शक्ति है जो वातावरण में मिठास घोल कर उसे खुशियों से भर सकती है या उसमे चिंगारी लगा कर आग भड़का सकती है।

शब्द संसार बदल सकते है। सोच समझ कर बोलना, कम शब्दों में ज्यादा बात कहना, व्यर्थ की बातें न करना, अच्छाई खोजना, तारीफ करना, दुसरे की बात को सुनना एंव महत्त्व देना, विनम्र रहना, गलतियाँ स्वीकारना इत्यादि वार्तालाप के कुछ आम नियम है।इन पांच नियमों में इतनी शक्ति है कि ये आपकी जिंदगी बदल देंगे और आपके सपनों को हकीकत में बदलने की शक्ति जगाएंगेद्य अंत में एक ही बात

''जरूरतमंद की मदद कीजिये क्योंकि क्या पता कल आपको किसी की मदद की जरुरत हो''

—अभय प्रताप सिंह

समृद्ध भारत जागृति (3)

शासन और विपक्ष राजनीति जबरदस्त

सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच संवाद लोकतंत्र का सुंदर स्वरूप प्रस्तुत करता है। परन्तु वर्तमान राजनीति इस तरह विकृत होती जा रही कि संवाद विवाद का रूप ले चुका है। सत्ता लोलुप्ता शासन की चाह में सभी विपक्षी राजनीतिक पार्टियों इस तरह आक्रामक हो गई है कि राष्ट्रहित को भी दरकिनार कर दिया गया है। शासन द्वारा दिए गए हर निर्णय का विरोध हर स्तर से करना ही विपक्ष की मानसिकता बन चुकी है। तीन तलाक बिल, नागरिकता संशोधन कानून आदि विषयों पर जनमानस की भावनाओं को भड़का कर जनता के मन में विभिन्न प्रकार के भ्रांतिपूर्ण भय को जन्म देकर लगभग सभी राजनीतिक दलों ने देश में विभिन्न प्रकार के आंदोलन प्रारंभ कर दिए इसके परिणाम स्वरूप देश की राजधानी दिल्ली से लेकर उत्तर प्रदेश ,बिहार आदि लगभग सभी राज्यों में हिंसात्मक प्रदर्शन शुरू हो गया।आगजनी लूटपाट का माहौल चारो तरफ फैल गया है।इसमें जनता को तो भारी मुसीबतों का करना ही पड़ा साथ ही सरकारी संपत्ति का भी भरपूर नुकसान हुआ । हर मामले को इतना तूल दिया गया विपक्षी राजनीतिक दलों की तरफ से कि हिंसा की आग रुकने का नाम नहीं ले रही थी। जन मानस के मन में यह भय व्याप्त हो गया था मानो नागरिकता कानून द्वारा उन्हें देश से निकाल दिया जाएगा। यहां तक की जब चांडाल चीन ने एल ए सी पर घुसपैठ करने की कोशिश की और सीमा को बदलने की चेष्टा की तब भी भारतीय शासन द्वारा सीमा पर सेना की नियुक्ति करना और चीन की चालबाजियों को रोकने के लिए सरहदों पर सेना की नियुक्ति करना कांग्रेस जैसे बड़े विपक्षी दलों को नागवार गुजरा। बयानबाजी तो इस तरह हुई मानो अगर सत्ता में वह लोग होते तो यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती। यह भी भूल गए वो लोग की अक्साई चिन जो कभी भारत का हिस्सा था वह भी कांग्रेस के शासनकाल में चीन के कब्जे में गया था चीन पूरी तरह उस हिस्से पर काबिज है ।इसी प्रकार तीन तलाक कानून का विरोध मुस्लिम कठमुलों के साथ मिलकर भरपूर विरोध किया गया जिसे शरीयत के विरोध में बताया गया। जो नियम स्त्रियों को मजबूर कर विवशता की जिंदगी जीने पर मजबूर करें उसे शरीयत का नाम देकर बदनाम नहीं करना चाहिए। यहां यह भी समझना आवश्यक है कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है और यहां सभी धर्मो को समान रूप से स्वतंत्रता प्राप्त है।परन्तु राष्ट्रधर्म सभी धर्मों से ऊपर है और इसका सम्मान करना सभी भारत वासियों का प्रथम कर्तव्य है। कोरोनावायरस जब औद्योगिक कारखानों के बंदी प्रारंभ हुई वायरस के डर से तथा रोजगार समाप्त होने के कारण मजदूरों का पलायन शुरू हुआ उस समय भी विपक्षी राजनीतिक दलों के शासन की नीतियों को जिम्मेदार ठहरा कर सरकार की निंदा की मानों कोरोनावायरस को सरकार ने ही फैलाया हो। आज किसानों ने अपनी मांगों को लेकर आंदोलन प्रारंभ किया तो आंदोलन की आड़ में अवसर का लाभ उठाकर सभी विपक्षी राजनीतिक दलों ने आंदोलन की आग में घी डालने का काम किया। खुद को किसानों का हिमायती बता कर पूरे देश में प्रदर्शन प्रारंभ कर दिए। कांग्रेस, आम आदमी पार्टी ,राष्ट्रीय जनता दल आदि सभी दलों ने पूरे देश में अपने झंडे बैनर लेकर आंदोलन को और भड़काने का काम किया। दिल्ली के मुख्यमंत्री महोदय श्री अरविंद केजरीवाल जी ने तो हद ही कर दी जब किसानों ने सुबह 8:00 बजे से 5:00 बजे तक भूख हड़ताल की तो वह भी भूख हड़ताल पर बैठ गए और अपने सभी कार्यकर्ताओं से घर पर ही रह कर ऐसा करने का अनुरोध किया। ऐसा नहीं है कि हमें इसका कारण ज्ञात नहीं केजरीवाल जी की इस पूरी कार्यवाही का सबब पंजाब के वोट बैंक में सेंध लगाना ही है।धन्य हो ये राजनीति पार्टियां और इनकी मानसिकता सत्ता लोलुपता की विकृत मानसिकता के साथ कभी राष्ट्र का भला नहीं हो सकता। 70 साल तक देश में शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी ने किसानों और देशवासियों के लिए क्या किया श्री राहुल गांधी अपनी परंपरागत सीट भी हार गए। साथ ही संसद में कांग्रेसी सांसदों की संख्या उनके कार्यों का जीता जागता उदाहरण है। अंत में हम यही कहना चाहते हैं कि सभी राजनीतिक पार्टियों से हमारा अनुरोध है कि राजनीति जनसेवा का एक पवित्र कार्य है जो जनता के बीच में पूर्ण समर्पण के द्वारा ही संभव है। अतः आप सभी इसका अनुसरण करें ऐसा ही करने से आपका और देश का भला हो सकता है।

तरुण सिंह

शहीद बन्दा वीर सिंह बैरागीः लोक गाथा'

मैं बन्दा सिंह बैरागी की,
जो गाथा आज सुनाता हूँ।
दिल थाम बैठकर सुनिएगा,
हिय पर रख पत्थर गाता हूँ।।1।।

इक दिन जवान बन्दा सिंह जब,
निकला शिकार को जंगल में।
गलती – से गर्भवती हिरणी
पर तीर चल गया इक पल में।।2।।

हिरणी के उदर से शिशु निकला,
जो ढेर हो गया कुछ पल में।
बन्दा सिंह लख उसकी तड़पन,
करुणा से भर उठा इक पल में।।3।।

हिरदय परिवर्तन होते ही,
बन्दा निज नाम बदल डाला।
बन्दा अब माधौ दास बना,
चल दिया तीर्थ गृह तज डाला।।4।।

तीरथ में जो – जो साधु मिले,
उनसे उसने बहु ज्ञान लिया।
कर योग–साधना का अभ्यास,
जीवन का मर्म हु जान लिया।।5।।
माधौ पहुँचा नान्देड़ में फिर,
कुटिया निज एक बना लीन्हीं।
बन गए सन्त फिर पहुँचे हुए
अरु ज्ञान–संजीवनि पा लीन्हीं।।6।।

बलिवेदी पर कुरबान हुए,
जब चारों सुत गुरु गोविंद के।
चिन्ता फिर एक यही रहती,
हित में सब लोग जुटें हिंद के।।7।।

इस हेतु गुरु गोविन्द सिंह जब,
मिल माधौ से थे यह बूझे।
वैराग्य छोड़ दीजे अब तो
आतंक मुगलिया से जूझे।।8।।

गुरु गोविंद सिंह के दर्शन पा,
माधौ का जीवन बदल गया।
गुरु बन्दा बहादुर नाम मिला,
जीवन का दर्शन बदल गया।।9।।

वह शुभ दिन तीन सितम्बर था,
सत्रह सौ आठ ईसवी का।
जिस दिन गुरु नाम नवीन धरा,
खुश हुई धरा, खुश अम्बर था।।10।।

दिए पाँच तीर व निशान साहिब,
इक नगाड़ा, एक हुक्मनामा।
सरहिंद नवाब से लो बदला,
दीवार जो सुत द्वय चिनवामा।।11।।

सुनकर बातें गुरु गोविंद की,
बन्दा की बाहें फड़क उठीं।
फिर लिए हजारों सैनिक सँग,
तलवारें सबकी चमक उठीं।।12।।

चल दिए सभी पंजाब ओर,
गुरु तेग शीश का बदला लिया।
गुरु सीस काटने वाले के,
सिर का ही पहले कत्ल किया।।13।।

जल्लाद जलालुद्दीन का सिर
काटा पर बदला बाकी था।
सरहिंद नवाब जो था जालिम,
उसका भी वध झट कर डाला।।14।।

गद्दार थे जो हिन्दू राजा,
मुगलों से थे जो मिले हुए।
बन्दे ने उनसे भी बदला
ले लिया होंठ जो सिले हुए।।15।।

इतना सब करते ही बन्दा,
जनता में बहु मशहूर हुआ।
कीरति फैली चहुँ ओर और,
जन–जन की नजर का नूर हुआ।।16।।

बन्दे का पराक्रम देख सभी,
भारी भयभीत हुए इतने।
दस लाख फौज लेकर टूटे,
झपटे उस पर जाने कितने।।17।।

सन् सत्रह सौ पन्द्रह का था,
मनहूस दिसम्बर सत्रह वह।
मुगलों ने उसको पकड़ लिया,
पछताया वह फिर–फिर रह–रह।।18।।

पिंजड़े में लौह के बन्द किया,
फिर हाथी पर था लाद दिया।
दिल्ली ले आए सड़क मार्ग,
मारा इतना तन छार किया।।19।।

सिख सैनिक साथ जो थे उनके,
वे सभी हजारों कैद किए।
थे खास सात सौ चालिस जो,
वे भी सब संग शहीद हुए।।20।।

जो वीर गति को हुए प्राप्त,
सबके शीषों को काट दिया।
टाँगा भालों की नोंकों पर,
फिर दिल्ली को प्रस्थान किया।।21।।

रस्ते – भर बन्दा बैरागी,
दुष्टों ने इतना तड़पाया।।
तपते चिमटों से माँस नोंच,
उस पर था जुल्म बहुत ढाया।।22।।

काजियों ने बन्दा वीरों सँग,
मुस्लिम बनने को ललकारा।
पर हिला न कोई एक वीर,
फिर बचा न था कोई चारा।।23।।

सत्रह सौ सोलह सात मार्च,
सौ हत्या नित क्रम बना लिया।
हार्डिंग लाइब्रेरी है जहाँ,
सौ वीरों को नित फना किया।।24।।

इक दरबारी मुहम्मद अमीन
बोला वीरों से एक रोज।
ऐसे गन्दे क्यों काम किए,
जो भोग रहे हो अधिक सोज।।25।।

सीने को फुलाकर गर्व सहित,
बन्दा जो बोला, उसे सुनो।
मैं शस्त्र हूँ इक परमेश्वर का,
देता दुष्टों को दण्ड सुनो।।26।।

क्या तुमने सुना नहीं अब तक
संसार में दुष्ट जो बढ़ जाते।
मुझसे सेवक धरती पे उतर
ऐसे दुष्टों पर चढ़ जाते।।27।।

बन्दा से जब यह पूछा गया,
किस मौत चाहते हो मरना।
मैं डरता नहीं मौत से अब,
दुःख मूल गात से क्या डरना।।28।।

बन्दा के वीर वचन अस सुन,
चहुँ ओर छा गया सन्नाटा।
दुष्टों ने फिर जो माँग रखी,
वह जान खा गया झन्नाटा।।29।।

बन्दा का पाँच बरस का सुत,
उसकी गोदी में पटक दिया।
बन्दा के कर में दिया छुरा,
आदेश कत्ल करने का दिया।।30।।

सुत अजय सिंह की हत्या को
निज हाथों वार करे कैसे ?
बन्दा ने ज्यों ही मना किया,
जल्लाद दो टूक किए वैसे।।31।।

इतने से भी मन नहीं भरा,
जल्लाद दुष्ट ने गजब किया।
बच्चे के दिल का माँस काट,
बन्दा के मुँह में ठूँस दिया।।32।।

बन्दा तो अद्भुत बन्दा था,
उठ चुका बहुत ही ऊपर था।
सब माँस नुच चुका था उसका,
हड्डी का वह ढाँचा भर था।।33।।

इतना सब कर भी नहीं रुके,
फिर जो दुष्टों ने किया सुनो।
धरती भी शायद फट जाती,
हिय पर पत्थर धर सभी सुनो।।34।।

हड्डी का ढाँचा भर जो बचा,
बन्दा सिंह बहादुर बैरागी।
हाथी से कुचलवाया उसको,
हँस–हँस के गया अद्भुत त्यागी।।35।।

आठ जून सत्रह सौ सोलह,
काली तिथि इतिहास की वो।
क्या भूल गए हिन्दुस्तानी,
बन्दा की अमर कहानी वो।।36।।

सिख सेना नायक बन्दा सिंह
जीवन में कई नाम पाए।
बन्दा बहादुर, लक्ष्मण देव,
माधौ दास भी कहलाए।।37।।

इकलौते ऐसे सिक्ख हुए,
बन्दा सिंह बहादुर बैरागी।
हम हैं अजेय, मुगलों के उस
भ्रम को तोड़े यह बड़भागी।।38।।

गुरु गोविंद सिंह के दो छोटे
सुत जो चिन दिए दिवार में।
उनकी भी शहादत का बदला
बन्दा ने ले लिया वार में।।39।।

इतना ही नहीं, गुरु संकल्पित,
प्रभु – सत्ता वाला राज दिया।
रजधानी लोक – राज्य की जो,
लोहगढ़ में खालसा राज्य दिया।।40।।

रख नीवँ खालसा राज की फिर
सिक्का – मोहरें जारी कीन्हीं।
गुरु नानक अरु गुरु गोविंद सिंह,
दोनों की छाप अमर कीन्ही ।।41।।

थे निम्न वर्ग के लोग उन्हें,
ऊँचे – ऊँचे पद दिलवाए।
भाई किसान मजदूर जो थे,
मालिक जमीन के बनवाए।।42।।

निर्बल – जन के प्रति प्रेम देख,
बन्दा सिंह हित सिर झुक जाता।
कर उसके पराक्रम की यादें,
बिन बोले 'रजक' ना रुक पाता।।43।।

छप्पन इंची सीने वाले,
यदि छप्पन भी मिल जाएँगे।
हों चाहे कितने शूरवीर,
बन्दा से कम पड़ जाएँगे।।44।।

ऐसा था अद्भुत धीर दृ वीर
बन्दा सिंह बैरागी अपना।
करता है कोटिक नमन 'रजक'
रख सीस चरन धर कर अपना।।45।।

भारत के अमर लाडले का,
गुणगान करूँ मैं कितना भी।
कागज भी कम पड़ जाएँगे,
स्याही नदियों के जितना भी।।46।।

वश चले धरा कागज कर लूँ ,
स्याही सब सागर की भर लूँ।
जग के वृक्षों की कलम बना,
गाथा यह पूरी मैं कर लूँ।।47।।

अम्बर से बरसते मेघों का,
पानी भी कम पड़ जाएगा।
बह निकलेंगे आँसू इतने,
क्या ऐसा तू कर पाएगा??48??

यह संशय ही है सता रहा,
क्षण–क्षण मुझको यह बता रहा।
क्यों कर तू साहस करता है,
वीरों को कौन सुमरता है??49??

अब बस कर साहस कर न 'रजक'
गाथा इतनी भी काफी है।
जो हैं जनखे, भूले – भटके,
कितना भी कह ना – काफी है।।50।।

मत कह उनको नहिं समझेंगे,
जो तान दुपट्टा सोते हैं।
लगती जब आग स्व – घर में है,
फिर जार – जार वो रोते हैं।।51।।

कायरों और का – पुरुषों के,
ईमान – धर्म नहिं होते हैं।
निज स्वारथ – हित बिक जाते हैं,
विष–बीज स्व–जन हित बोते हैं।।52।।

इतिहास सीख यह देता है,
गद्दार जो ऐसे होते हैं।
चौकन्ने सदा रहें इनसे,
पग – पग ये कांटे बोते हैं।।53।।

हैं राष्ट्र – भक्त जो हिन्दु 'रजक',
हो जायेंगे कृतकृत्य जान।
बन्दा सिंह बैरागी आगे,
होंगे नतमस्तक इसे जान।।54।।

अपना कर्त्तव्य किया पूरा,
बतलाकर गाथा बन्दे की।
पछताते हैं वे लोग सदा,
वीरों की करें जो अनदेखी।।55।।

हे शू र वी र ! हे ध र्म वी र !
कवि 'रजक' नमन तव करता है।
जागे स्वदेश अरु धर्म – प्रेम,
जन – जन में कामना करता है।।56।।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक''

अनुसंधान

'दामिनी काण्ड जैसे घृणित अपराधों का मूल निज संस्कृति की अवहेलना'

द्वापर में द्यूत क्रीड़ा में दाँव पर लगी द्रौपदी का दुष्ट दुर्योधन के दुराग्रहपूर्ण दुरादेश पर दुशासन द्वारा कुरुराज धृतराष्ट्र के राज–दरबार में भरी सभा में दामन तार–तार करने का जो दुस्साहस किया गया था, उसमें तो पाण्डवों का कुछ –कुछ दोष भी सिद्ध होता है, और फिर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने आकर उसका चीर हरण होने से उसे बचा भी लिया था, किन्तु देश के दिल और दिल वालों की दिल्ली की दुहिता दामिनी के साथ 16 दिसम्बर, 2012 की रात्रि चन्द दरिन्दों द्वारा दौड़ती बस में दिल दहला देने वाली दहशत पैदा कर, दरिन्दगी की सभी हदें पार कर, उसकी देह का दोहन कर, जिस प्रकार उसके दामन को तार–तार किया गया और उसके दोस्त द्वारा विरोध करने पर दबंगई और दादागिरी की सभी सीमाएँ लाँघकर उसी के सामने सबके द्वारा बारी–बारी से दुष्कर्म (गैंगरेप) किया गया तथा लहूलुहान हालत में दोनों को चलती बस से फेंक दिया गयाय इस घटना ने तो न केवल दिल्ली, न केवल देश, बल्कि दुनिया को ही हिलाकर रख दिया। दामिनी का दोस्त तो दवाओं और दुआओं से बच गया किन्तु दामिनी को तो देशी–विदेशी दवाएँ और दुआएँ एवं बड़े–बड़े शल्य चिकित्सक भी बचा नहीं सके। हाँ, इतना अवश्य हो गया कि दम निकलने से पहले दामिनी ने अपने बयान दर्ज करा दुनिया के सामने दरिन्दों के वो खौफनाक चेहरे बे–नकाब कर दिए जिन्होंने देश ही नहीं, दुनिया को स्तब्ध कर दिया। दुर्दान्त से दुर्दान्त दस्यु ही क्या, दैत्य भी शायद इतना घृणित कार्य नहीं कर सकते जो इन दरिन्दों ने किया।दुःखद बात यह भी रही कि दामिनी व उसके दोस्त को दरिन्दों द्वारा बस से फेंकने के बाद आम जनता जहाँ मूक दर्शक बन पूस की सर्द रात में उन दोनों को तड़पते हुए देखती रही, वहीं तीन–तीन इलाकों की पुलिस भी अपने–अपने इलाकों की घटना न होने की बात पर ही उलझती रही। काश, इतना खून बहने से पहले ही समय पर दामिनी को अस्पताल पहुँचा दिया गया होता तो शायद वह इस तरह दुनिया छोड़कर न जा पाती।इस बीभत्स काण्ड ने दुनिया को झकझोर कर रख दिया और दोषियों को मृत्यु–दण्ड अथवा नपुंसक बना देने जैसी कठोर सजा देने की माँगों ने जोर पकड़ लिया। यहाँ तक कि इन दरिन्दों में शामिल सर्वाधिक दोषी नाबालिग को भी सजा में किसी भी प्रकार की रियायत न देने की माँग भी पूरी दुनिया से उठीं। फिर भी वह राजनीतिक खींचतान का फायदा उठाकर बच गया। हाँ, आगे शायद अब ऐसे अपराधी भी बच नहीं पाएंगे। एक दरिन्दे की मौत सजा के दौरान कारागार में ही हो गई। शेष चारों दरिन्दों को बाद में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा फाँसी की सजा भी सुना दी गई। लम्बी जद्दोजहद के बाद बार–बार इसे टलवाया भी गया, किन्तु कानून के फन्दे से बच निकलना इतना आसान नहीं। 'आखिर जीत सत्य की ही होती है, यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।' इस प्रकार 16 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली में घटी इस दुःखद घटना का अन्ततः 20 मार्च, 2020 को दिल्ली की ही तिहाड़ जेल में प्रातः 5:30 पर चारों दरिन्दों को फाँसी देकर पटाक्षेप कर दिया गया।अब प्रश्न उठता है कि 'क्या इन दरिन्दों को फाँसी देने के बाद इस तरह की गैंगरेप की घटनाओं पर पूर्ण या आंशिक विराम लग सकेगा?' मेरा अपना मानना है कि जितना हम समझ रहे हैं, उतना बदलाव नहीं हो सकेगा। कारण, 'आज जल, वायु और ध्वनि–प्रदूषण से भी बढ़कर जो प्रदूषण सर चढ़कर बोल रहा है, वह है वैचारिक प्रदूषण। जब तक हमारे विचारों में सात्त्विकता नहीं आएगी, ऐसी बीभत्स घटनाएँ कम होने का नाम नहीं लेंगी। आज हम धन कमाने की दौड़ में तो लगे हैं, पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता भी हमारे सर चढ़कर बोल रही है, आधुनिकतम भोग –विलासों के साधन जुटाना ही हमारा चरम लक्ष्य बन चुका है, किन्तु अपनी महनीय सनातन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा की परवाह किसी को नहीं है।'यह तय है कि जिस राष्ट्र की संस्कृति नष्ट हो जाएगी, वह राष्ट्र भी शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा। आज अखबारों से लेकर विभिन्न दूरदर्शन चौनलों पर जिस प्रकार के तड़क–भड़क वाले अश्लील विज्ञापन परोसे जा रहे हैं, उनसे युवा पीढ़ी तो दूर, दुधमुँहे बच्चे तक मानसिक रूप से विकृत होते जा रहे हैं। याद रखें–

'संस्कृति से ही सम्पूर्णता की ओर जाया जा सकता है, ऐसा मेरा अपना मानना भी है और पूर्ण विश्वास भी।'

यदि इस वैचारिक प्रदूषण को दूर करना है तो प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सहित फिल्मों में दिखलाए जा रहे नग्न विज्ञापनों और अश्लीलता से लबरेज आइटम सांग्स आदि पर भी तत्काल रोक लगानी होगी। 'संस्कृति से सम्पूर्णता की ओर (Universality Through Culture)' का नारा बुलन्द करते हुए युवा पीढ़ी को संस्कारित करना होगा।

'–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल'

अस्थिरता के दौर में बेहतरीन निवेश के माध्यम हैं डायनेमिक एसेट–एलोकेशन फंड्स

वर्तमान में कोरोना वायरस महामारी के डर से बाजार में उच्च अस्थिरता है और दुनिया भर में इक्विटी बाजारों में तेजी आई है। खुदरा निवेशकों के लिए ऐसे समय में घबराहट स्वाभाविक है, क्योंकि इस तरह के तेज सुधार या गिरावट आमतौर पर नहीं होते हैं।

हिन्दुस्तान

तरुण अग्रवाल

उन निवेशकों के लिए जो डायनेमिक एसेट–एलोकेशन फंड्स में निवेश करते हैं, विशेष रूप से फंड्स की बैलेंस्ड एडवांटेज श्रेणी, उन पर प्रभाव कम से कम रहा है। कारण–इस तरह के फंड्स ने अपने इक्विटी एक्सपोजर में कटौती की क्योंकि बाजार उच्च स्तर पर पहुंच गए। इन फंड्स का एक प्रमुख लाभ यह है कि जोखिम का प्रबंधन और इसे कम करने के लिए वे विभिन्न एसेट्स जैसे कि बांड और इक्विटी में निवेश करते हैं। इसलिए, ऐसे अधिकांश निवेशक जो इक्विटी बाजारों के आधार पर निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए ये फंड लाभदायक और रक्षात्मक दोनों साबित होते हैं।

बैलेंस्ड एडवांटेज फंड डायनेमिक रूप से प्रबंधित इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो आम तौर पर 30 प्रतिशत और 80 प्रतिशत के बीच अपने इक्विटी आवंटन में बदलाव करते है, जो कि बाजार मूल्य पर निर्भर करता है, जिसके लिए मूल्य–आय अनुपात या मूल्य–से–पुस्तक अनुपात का उपयोग किया जाता है। यह श्रेणी सेबी स्कीम के पुनः वर्गीकरण अभ्यास के बाद अस्तित्व में आई है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल बैलेंस्ड एडवांटेज फंड निवेश के लिए बहुत अच्छा है। इस फंड को अपनी श्रेणी में अग्रणी माना जाता है। यह डायनेमिक रूप से प्रबंधित एसेट एलोकेशन योजनाओं में सबसे पुराना भी है। न्यूनतम पर खरीद, उच्चतम पर बिक्री रणनीति के कारण, फंड अतीत में बेहतर अस्थिरता–समायोजित रिटर्न उत्पन्न करने में कामयाब रहा है। निवेश करने की बात आती है तो इस फंड का इस्तेमाल स्टेपिंग स्टोन के रूप में किया जा सकता है।

तरुण अग्रवाल, डायरेक्टर, मृगाश्री कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा

(वित्तीय निवेश से पहले स्वयं समीक्षा अवश्य करें)

Mrigaashree
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

झाँकी

देव दिवाली पर वाराणसी का दिव्य दर्षन

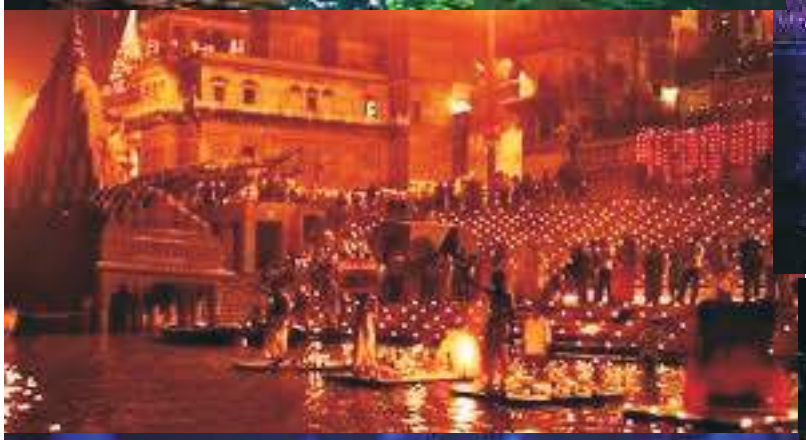

समृद्ध भारत वसुंधरा

झाँकी

समुद्र में अमेरिका और चीन के बीच हो रहे विवाद के चित्र